भारतीय राष्ट्रवाद का बदलता स्वरूप: 'राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन' (एन.डी.ए.) सरकार(2014-2020) के विशेष संदर्भ में एक समीक्षात्मक अध्ययन

राजनीति शास्त्र में पीएच.डी. की उपाधि
हेतु प्रस्तावित अनुसंधान की
रूपरेखा

शोधार्थी
अमित प्रताप जटिया

पर्यवेक्षक
प्रो. लजवन्त सिंह
समाजशास्त्र एवं राजनीतिक विज्ञान विभाग
समाज विज्ञान संकाय

समाजशास्त्र एवं राजनीतिक विज्ञान विभाग, समाज विज्ञान संकाय
दयालबाग शिक्षण संस्थान (डीम्ड विश्वविधालय)
आगरा, उत्तर प्रदेश, 282005
2022

प्रस्तावना

विश्व के आधुनिक इतिहास में ऐसी कई प्रभावशाली विचारधाराएं एवं सिद्धांत हुए हैं जिनमें विश्व इतिहास की दिशा बदलने की क्षमता रही है। फ्रांस क्रांति के दौरान अवतरित हुए तथा कई विद्वान राजनीतिक विचारकों के अनुसार सम्पूर्ण बीसंवी सदी की अधिकांश उथल-पुथल हेतु उत्तरदायी, ऐसे ही एक शक्तिशाली एंव आकर्षक राजनीतिक सिद्धांत का नाम है 'राष्ट्रवाद'। विद्वानों का मानना है कि राष्ट्रवाद ने आधुनिक इतिहास को आगे बढ़ाने में कई तरह से ईंधन का कार्य किया है तथा लगभग प्रत्येक आधुनिक राष्ट्र इससे प्रभावित हुआ है, हालांकि राष्ट्रवाद की प्रकृति प्रत्येक राष्ट्र में भिन्न-भिन्न रही है। राष्ट्रवाद को एक राजनीतिक-सांस्कृतिक सिद्धांत के रूप में भी देखा जाता है और इसे एक जनभावना भी बताया गया है तथा कुछ विचारकों ने इसे एक आंदोलन भी माना है तो बहुतों ने इसे एक विशेष प्रकार की विचारधारा भी कहा है, लेकिन 'राष्ट्रवाद' के प्रयोग, उपयोग एवं परिणाम को देखते हुए सामान्यतः 'राष्ट्रवाद' को एक 'दोधारी तलवार' के रूप में विश्लेषित किया जाता है जो कि एक तरफ किसी राष्ट्र के लोगों के लिए एक वरदान साबित हो सकती है जो उन्हें आपसी विभिन्नताओं एंव विविधताओं के वाबजूद तथा मतभेदों को दरकिनार कर एक प्रकार की 'जोड़ने वाली शक्ति'(सीमेंटिक/बाइंडिंग फोर्स) की तरह कार्य करे तो वहीं दूसरी तरफ एक विनाशकारी शक्ति का भी रूप ले सकती है यदि राष्ट्रवाद का सहारा लेकर किसी राष्ट्र में एक धर्म अथवा प्रजाति(रेस) के लोगों की श्रेष्ठता स्थापित करते का प्रयास किया जाए या जब राष्ट्रवाद के नाम पर युद्ध को न्यायोचित बताया जाए।

राष्ट्रवाद के दोनों ही स्वरुपों को पूरा विश्व पिछले दो-ढाई शदी में देख चुका है। राष्ट्रवाद ने जहाँ एक तरफ यूरोप में राजतांत्रिक तानाशाही की समाप्ति हेतु लोकतांत्रिक क्रांतियों द्वारा यूरोप के लोकतंत्रीकरण में योगदान दिया तो वहीं दूसरी ओर इसने देशों के मध्य कटुता, युद्धों एंव अस्त्र-शस्त्र की स्पर्धा को भी बढावा दिया जिसके परिणामस्वरूप अंततः विश्वयुद्ध छिड़ गया। इसके साथ ही राष्ट्रवादी भावनाओं ने जहां एक तरफ उपनिवेशवाद व साम्राज्यवाद को ध्वस्त कर बहुत से देशों को आजादी तथा लोकतांत्रिक शासन प्रणाली प्रदान की तथा शोषण से मुक्ति दिलाई तो वहीं दूसरी ओर हिटलर, मुशोलिनी, स्टॉलिन एंव माओत्से तुंग जैसे नेताओं के हाथों में आकर

यही राष्ट्रवाद साम्राज्यवाद व तबाही का वाहक भी बना है, इसके अतिरिक्त राष्ट्रवाद ने जहां संयुक्त राज्य अमेरिका जैसे शक्तिशाली राष्ट्र को दुनिया के सामने खड़ा किया तो वहीं इसी तरह की राष्ट्रवादी भावनाओं ने ही कई शक्तिशाली राष्ट्रों को टुकड़ों में विभाजित भी किया है।

उपरोक्त से स्पष्ट है कि राष्ट्रवाद का स्वरूप समय, परिस्थिति, उद्देश्य एंव नेताओं-राजनीतिज्ञों के विचारो के अनुसार परिवर्तित होता रहता है, यही कारण है कि राष्ट्रवाद जैसे गतिशील व जीवंत सिद्धांत की कोई सर्वमान्य परिभाषा नही दी जा सकी है तथा विभिन्न विचारकों ने राष्ट्रवाद के भिन्न-भिन्न प्रकार एंव भेद बताये हैं किन्तु फिर भी यह तो निश्चित रूप से कहा जा सकता कि राष्ट्रवाद वर्तमान समय में भी एक बहुत ही आकर्षक एवं प्रभावशाली सिद्धांत है जो कि आज भी विभिन्न राष्ट्रों की आंतरिक राजनीति एंव विदेश नीति को विभिन्न तरह से प्रभावित कर रहा है।

जहाँ तक भारतीय राष्ट्र एंव राष्ट्रवाद का प्रश्न है तो इस संबंध में विभिन्न विचारकों के विचार भिन्न-भिन्न हैं। भारतीय राष्ट्र के संबंध में विभिन्न राजनीतिक विद्वानों के विचारो को प्रमुख रूप से तीन वर्गों में विभजित किया जा सकता है-

1. पहला जिनका मानना है कि भारतीय प्रायद्वीप में अंग्रेजों के आगमन से पूर्व कोई राष्ट्र नही था या भारत एक राष्ट्र बना भी तो ब्रिटिश शासन की वजह से,(जॉन स्ट्रैची, एंडरसन इत्यादि के अनुसार)।
2. दूसरा जिनका मानना है कि भारत एक प्राचीन राष्ट्र है जिसमें कहीं न कहीं भौगोलिक-सांस्कृतिक एकता की चेतना थी जिसे एक न एक दिन आधुनिक राष्ट्र बनना ही था(महात्मा गांधी, नेहरू, थरूर इत्यादि के अनुसार)।
3. तीसरा जिनका मानना है कि भारत एक प्राचीन हिन्दू राष्ट्र है तथा इसे हिन्दू राष्ट्र ही बनाया जाना चाहिए(सावरकर इत्यादि के अनुसार)।

पहले वाले विचार वर्ग में प्रमुख रूप से पश्चिमी विचारक शामिल हैं। द्वितीय वर्ग में प्रमुख रूप से भारतीय स्वतन्त्रता आंदोलन से जुडे प्रमुख विचारक तथा उनके समकालीन समर्थक शामिल हैं, जबकि तीसरे विचार वर्ग

में प्रमुख रूप से हिन्दू राष्ट्रवादी एवं तथाकथित सांस्कृतिक राष्ट्रवादी आते हैं। इन तीनों ही विचार वर्ग के विद्वानों के पास एक-दूसरे के तर्कों के स्वभाविक उत्तर एवं स्वयं के विचारों की पुष्टि हेतु स्वघोषित प्रमाण हैं।

भारतीय राष्ट्रवाद के संबंध में यह बात लगभग निर्विवाद रूप से सत्य है कि भारत में राष्ट्रवाद एवं आधुनिक प्रकृति की राष्ट्रीयता की चेतना का विकास ब्रिटिशों की अप्रत्यक्ष देन है। भारतीय राष्ट्रवाद की प्रकृति औपनिवेशिक शोषण-विरोधी थी। भारत में राष्ट्रवाद का विकास ब्रिटिशों द्वारा किये जा रहे औपनिवेशिक शोषण तथा उससे प्रस्फुटित भारतीय आमजन में अंग्रेजों के विरूद्ध घृणाभाव तथा भारतीय अभिजन वर्ग में आयी आत्म-सुधार की चेतना के परिणामस्वरूप हुआ। इसके अतिरिक्त ब्रिटिश औपनिवेशिक काल में आरंभ हुए सामाजिक एवं धर्मिक सुधार आंदोलन, अंग्रेजों द्वारा स्थापित की गई देश में राजनीतिक एकता, पश्चिमी शिक्षा का प्रभाव, अंग्रेजी नीतियों के आलोचक समाचार पत्र-पत्रिकाएं, राष्ट्रवादी-देशभक्ति साहित्य, यातायात तथा संचार साधनों का विकास, पश्चिम में घटित क्रांतियों का प्रभाव आदि-इत्यादि सभी घटनाक्रमों ने भारतीय राष्ट्रवाद को विकसित करने में योगदान दिया। इसके अतिरिक्त तिलक, गांधी, नेहरू इत्यादि आंदोलनकारी नेताओं की असाधारण नेतृत्व कला एवं क्षमता ने भी इस कार्य में निर्णायक भूमिका निभाई।

विभिन्न् विचारकों का मानना है कि ब्रिटिश शासन द्वारा अपने हितों की पूर्ति हेतु अपनाये गए विकासवादी स्वरूप ने यदि भारतीय राष्ट्रवाद के जन्म के लिए पृष्ठभूमि तैयार की तथा अप्रत्यक्ष रूप से योगदान किया तो वहीं उसके प्रतिक्रियावादी एवं दमनकारी स्वरूप ने इस प्रक्रिया में ‘आग में घी’ का कार्य किया।

भारतीय राष्ट्रवाद का अध्ययन करने पर अखिल भारतीय स्तर पर इसके मुख्यतः दो भिन्न दृष्टिकोण अथवा स्वरूप सामने आते हैं-

1. धर्मनिरपेक्ष राष्ट्रवाद(भारतीय राष्ट्रवाद)   2. सांस्कृतिक राष्ट्रवाद(हिन्दु राष्ट्रवाद)

एक तरफ जहां धर्मनिरपेक्ष राष्ट्रवादियों यथा- गोखले, महात्मा गांधी, जवाहरलाल नेहरू तथा अम्बेडकर इत्यादि आंदोलनकारी नेताओ का राष्ट्रवाद आधुनिकतावादी, विविधता में एकता को स्वीकार करने वाला तथा उदार संवैधानिक मूल्यों से प्रभावित राष्ट्रवाद है, तो वहीं दूसरी ओर सांस्कृतिक राष्ट्रवाद है, जो मुख्यतः हिन्दू

अथवा वौदिक संस्कृति के मूल्यो से प्रभावित रहा है जिसके प्रणेताओं में दयानंद सरस्वती, स्वामी विवेकानंद, अरविंद घोष, वी. डी. सावरकर, तथा एम. एस. गोलवलकर इत्यादि का नाम प्रमुख रूप से लिया जा सकता है। भारतीय धर्मनिरपेक्ष राष्ट्रवाद की प्रकृति औपनिवेशिक भारत में ब्रिटिश-शासन विराधी तथा स्वतंत्र भारत में 'विविधता में एकता' के सूत्र के अनुसार एक सशक्त बहुसांस्कृतिक एवं बहुलवादी राष्ट्र के निर्माण की रही हैं। वहीं दूसरी ओर भारतीय सांस्कृतिक राष्ट्रवाद की प्रकृति औपनिवेशिक भारत में मुख्यतः धार्मिक पुनरूत्थानवादी एवं स्वतंत्रता के कुछ समय पहले से ही तथा उसके बाद भी भारत को एक हिन्दु राष्ट्र बनाने की रही है। भारतीय राष्ट्रवाद का यह द्विवर्गीकरण बीसवीं सदी के आरंभ में ही स्पष्ट रूप से प्रकट होने लगा था जो आज स्वतंत्रता के सात दशकों के पश्चात भी अस्तित्व में है तथा भारतीय राजनीति को प्रभावित कर रहा है।

भारतीय राजनीति के विद्वानों का मानना है कि देश की स्वतंत्रता के पश्चात से लगभग 1970 तक भारतीय राष्ट्रवाद स्वाधीनता आंदोलन के आदर्श मूल्यों से जुड़ा रहा तथा भारतीय राजनीति समावेशी संस्कृति तथा धर्मनिरपेक्षता के सिद्धांत पर आगे बढती रही किन्तु 1970 व 1980 के दशक की कई अहम घटनाक्रमों ने हिन्दु राष्ट्रवादियों के उत्तराधिकारी दलों को फलने-फूलने का उपयुक्त अवसर दे दिया। इन प्रमुख घटनाक्रमों में से एक श्रीमती इंदिरा गांधी द्वारा लगाए गए आपातकाल ने तथा उस दौरान हुई संवैधानिक मूल्यों की उपेक्षा ने लगभग सभी महत्वपूर्ण विपक्षी दलों को काग्रेस के खिलाफ एकजुट होने पर मजबूर कर दिया तथा 1977 में पहली बार केंद्र में एक गैर-कंग्रेस सरकार बनने में सफल रही। इसके अतिरिक्त श्री राजीव गांधी के कार्यकाल में 'शाहबानो मामले' को लेकर कांग्रेस पर 'क्षद्म सेक्युलरवाद' अपनाने के आरोप लगे जिसके बाद से 'जनसंघ' के उत्तराधिकारी दल 'भारतीय जनता पार्टी' का वोट-प्रतिशत बढता गया। इसके पश्चात 1990 के दशक के अयोध्या आंदोलन ने तो बीजेपी को केंद्र में सबसे बडा विपक्षी दल बना दिया। इसके बाद कई बार बीजेपी के नेता श्री अटल बिहारी बाजपेयी देश के प्रधानमंत्री चुने गए जिनके कार्यकाल में भारतीय वैज्ञानिकों द्वारा परमाणु बम परीक्षण, कारगिल युद्ध सहित बहुत से महत्वपूर्ण घटनाक्रम हुए तथा इन सब घटनाक्रमों के साथ-

साथ ही भारतीय(अर्थात मुख्यधारा का) राष्ट्रवाद भी स्वाधीनता आंदोलन के आदर्शों से दूर होता गया और 'हिन्दुत्व' की विचारधारा से अधिक प्रभावित होता गया।

बहुत से राजनीतिक विचारकों ने 1990 के दशक में हिन्दु राष्ट्रवाद के उभार तथा बीजेपी के नेतृत्व वालीं सरकारों को अपवाद के रूप में समझा और जब 2004 तथा 2009 के आम चुनावों में कांग्रेस के नेतृत्व वाले 'संयुक्त प्रगतिशल गठबंधन' की सरकारें बनीं तो उन्हें भारतीय राजनीति में 'सेक्युलरवाद' की विजय बताया गया किन्तु इसके अगले ही आम चनावों ने यह प्रमाणित कर दिया कि 'हिन्दु राष्ट्रवाद' समकालीन भारतीय राजनीति में अपवादस्वरूप नहीं उभरा था बल्कि इसके दीर्घकालीन निहितार्थ थे।

सन् 2014 के भारतीय आम चुनावों में भाजपा की अभूतपूर्व तथा अप्रत्याशित विजय ने एक बार पुनः भारतीय राजनीति के समीकरणों को बदल कर रख दिया। केंद्र में भाजपा की सरकार बनने के पश्चात से भारतीय राष्ट्रवाद की विभिन्न व्याख्याएँ की जा रहीं हैं। छोटे-से-छोटे घटनाक्रम को भी राष्ट्रवाद के संदर्भ में परिभाषित एवं विश्लेषित किया जा रहा है। जहां एक तरफ जम्मू कश्मीर में आतंकी हमले के पश्चात पाकिस्तान अधिकृत कश्मीर में घुसकर भारतीय सेना के कार्यवाही तथा चीन के साथ डोकलाम विवाद के समय सरकार द्वार दिखाए गए मजबूत इरादों को देखते हुए कहा जा सकता है कि भाजपा के नेतृत्व वाली वर्तमान 'राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन' की सरकार राष्ट्र के सुरक्षा-मामलों को लेकर बुलंद हौंसले रखती है, वहीं दूसरी ओर 'हिन्दुत्व' की राजनीतिक विचारधारा को भारतीय 'सांस्कृतिक राष्ट्रवाद' के चोले में लपेटकर परोसने के प्रचलन ने फिर से एक बार जोर पकड़ लिया है। वर्तमान में श्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व वाली भाजपा सरकार के कार्यकाल में भारतीय राष्ट्रवाद की प्रकृति में महत्वपूर्ण परिवर्तन हो रहे हैं जिनका विश्लेषण तथा समीक्षात्मक अध्ययन प्रस्तावित अनुसंधान की मुख्य विषयवस्तु है।

सैद्धांतिक रूपरेखा

राष्ट्रवाद एक ऐसा आंदोलन माना जाता है जिसका मुख्य उद्देश्य किसी राष्ट्र हेतु स्वतंत्रता (अथवा स्ववयत्ता) प्राप्त करना तथा राष्ट्रीय सरकार बनाना या किसी राज्य विशेष की सीमाओं के भीतर एक विशेष प्रकार के राष्ट्र

के निर्माण हेतु संगठित प्रयास करना, होता है। अर्थात 'राष्ट्रवाद किसी राष्ट्र को पूर्ण राज्यत्व प्राप्त कराने या किसी राज्य को एक विशेष प्रकार के राष्ट्र में बदलने की मुहिम है।' राष्ट्रवाद किसी राष्ट्र विशेष के सदस्यों से जाति, धर्म, वर्ग, प्रजाति(रेस), या जातियता (एथनिसिटि) से परे राष्ट्र के प्रति सर्वोच्च निष्ठा की मांग करता है। **हांस कोहन (Hans Kohn,1955)** के अनुसार "राष्ट्रवाद एक विचार है, एक शक्ति है जो मनुष्य के मस्तिष्क और हृदय को नवीन विचारों और भावनाओं से भर देती है और अपनी चेतना को एक संगठित क्रिया अथवा लक्ष्यों के कार्यों में परिणित करने की प्रेरणा देती है।" **प्रो. स्नाइडर** ने राष्ट्रवाद को एक विशेष प्रकार की मनोस्थिति के रूप में परिभाषित किया है। उनके अनुसार 'इतिहास के एक विशेष चरण पर राजनीतिक, आर्थिक सामाजिक व बौद्धिक कारणों का उत्पाद 'राष्ट्रवाद' एक सुपरिभाषित भौगोलिक क्षेत्र में निवास करने वाले ऐसे व्यक्तियों के समूह की मनःस्थिति, अनुभव या भावना है जो समान भाषा बोलते हैं, जिनके पास एक ऐसा साहित्य है जिसमें राष्ट्र की अभिलाषायें अभिव्यक्त होती हैं, जो समान परंपराओं और सामान रीति-रिवाजों से संबद्ध हैं, जो अपने वीर पुरूषों की पूजा करते हैं तथा कुछ स्थितियों में समान धर्म वाले हैं।"

पश्चिमी राष्ट्रवाद 'एक राज्य-एक राष्ट्र' तथा 'एक राष्ट्र-एक संस्कृति' का आव्हान करता है, अर्थात राज्य जो कि एक राजनीतिक इकाई है तथा राष्ट्र जो कि एक सांस्कृतिक इकाई है, के मध्य एकरूपता लाने की कोशिश करता है। **गैलनर (Ernest Gellner,1983:1)** के अनुसार 'राष्ट्रवाद मुख्य रूप से एक राजनीतिक सिद्धांत है जो कहता है कि राजनीतिक इकाई की राष्ट्रीय इकाई के साथ सुसंगतता (अनुकूलता) होनी चाहिए।' **प्रोफेसर एंथनी स्मिथ** ने राष्ट्रवाद को एक वैचारिक आंदालन के रूप में परिभाषित किया है। **स्मिथ (Smith,2001)** के अनुसार "राष्ट्रवाद स्वायत्तता ,एकता (एकजुटता) और वैयक्तिकता को प्राप्त करने या बनाए रखने हेतु एक वास्तविक या आकांक्षित(संभावित) राष्ट्र के सदस्यों का एक वैचारिक आंदोलन है।" **जे. एच. हयेस (Heyes,1926)** के अनुसार "लोगों (समूह के सदस्यों) द्वारा राष्ट्र और मातृभूमि इत्यादि (इंटीरियर्स) के प्रति वफादारी और लगाव ही राष्ट्रवाद का आधार है।" हेयस का मानना है कि एक मनुष्य को दूसरे मनुष्य जो बात अलग करती है, वह उनकी मान्यताएं अथवा विश्वास नहीं हैं बल्कि उनका जन्म स्थान, मातृभूमि, भाषा और प्रजाति(रेस) है, जो

लोग मातृभूमि और राष्ट्र की चारदीवारी के भीतर हैं वह इसके हैं और जो इसके बाहर हैं वे गैर (एलियन) हैं। इन्ही कारकों के आधार पर ही लोगों में एकल भाग्य और सामान्य अतीत को साझा करने की प्रवृत्ती होती है **(Heyes,1926)**। हयेस से भिन्न् **ब्रूली (Breuilly,1985)** का तर्क है कि "राष्ट्रवाद का जातीयता(एथनिसिटि) या जातीय पृष्ठभूमि से बहुत अधिक लेना देना नहीं है बल्कि राजनीतिक उत्प्रेरणा से अधिक है क्योंकि राष्ट्रवादियों को राष्ट्रीय संस्कृति के अपने व्यक्तिगत अर्थों से अपनी विचारधारा बनाते देखा जा सकता है।" इसी तरह **बेनेडिक्ट एंडरसन** ने भी राष्ट्र की व्याख्या के जातीय (एथनिक) सिद्धांत को नकार दिया तथा राष्ट्र को एक **'काल्पनिक समुदाय'** माना। एंडरसन के अनुसार राष्ट्र की आम प्रचलित क्षेत्रीय भाषा(वर्नाकुलर) में मुद्रित राष्ट्रवादी साहित्य की सहायता से लोगों में राष्ट्र की कल्पना कराई जाती है, इसी प्रक्रिया तथा प्रवृत्ति को एंडरसन ने राष्ट्रवाद कहा है **(Anderson,1983)**। **कैडूरी (Kedourie,1993:9)** के अनुसार "राष्ट्रवाद के सिद्धांत के अनुसार मानव समूह प्राकृतिक रूप से राष्ट्रों में बंटा हुआ है जिनकी अपनी-अपनी विभिन्न विशेषताएँ होतीं हैं तथा सरकार का एकमात्र वैध तरीका राष्ट्रीय सरकार बनाना है।"

पीटर (Alter,1994) ने तो यहां तक कहा है कि "राष्ट्रवाद एक ऐसी राजनीतिक शक्ति है जिसने पिछली दो शताब्दियों में यूरोप तथा विश्व के इतिहास को आकार देने में स्वतंत्रता, संसदीय लोकतंत्र अथवा साम्यवाद से भी अधिक महत्वपूर्ण कार्य किया है।"

'भारतीय राष्ट्रवाद' पश्चिमी राष्ट्रवाद की तुलना में कई महत्वपूर्ण आधारों पर भिन्न है। पश्चिम का राष्ट्रवाद राष्ट्र-राज्य की मंग करने वाला या फिर साम्राज्यवादी रहा है, यही वजह है कि यूरोप छोटे- छोटे राष्ट्र-राज्यों में विभक्त हो गया तथा ब्रिटेन, फ्रंस, जर्मनी इत्यादि देशें ने उपनिवेशवादी नीतियाँ अपनाईं किन्तु भारतीय राष्ट्रावाद जिसका मुख्य उद्देश्य ब्रिटेन से राजनीतिक स्वतंत्रता प्राप्त करना था, पश्चिम के विपरीत साम्राज्यवाद-विरोधी तथा समावेशी प्रकृति का है। पश्चिम के अधिकांश राष्ट्र 'एक राष्ट्र-एक राज्य' तथा 'एक भाषा-एक संस्कृति' के आधार पर गठित हुए हैं जबकि भारतीय प्रायद्वीप के विभिन्न् क्षेत्रों में विभिन्न भाषाओं, संस्कृतियों व धर्मों के लोग रहते आये हैं। भारत एक राष्ट्र से अधिक सभ्यता है **(Akshya Mishra,2016)**

इसीलिए स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान 'सर्वसमावेशी राष्ट्रवाद' उभर कर सामने आया जिसमें देश की 'विविधता में एकता' को स्वीकार किया गया तथा उसे भारतीय राष्ट्र की कमजोरी नही बल्कि ताकत समझा गया। भारतीय प्रायद्वीप में राष्ट्रवाद एक नया सिद्धांत था जो कि पश्चिम से आया था। **तिलक (Tilak, The Maratha;1913 as cited in Habib, 2017)** के अनुसार "भारतीय राष्ट्रवाद एक ऐसी शक्ति है जिसका उभार कुछ ही समय पहले हुआ है और हमारे समय तक भी इसे आम स्वीकारिता प्राप्त नही हुई है।" भारतीय समावेशी राष्ट्रवाद ने बुद्धजीवी वर्ग को एक ऐसी राजनीतिक संरचना को परिकल्पित करने के लिए प्रेरित किया जो सामंतवाद तथा औपनिवेशिक दोनों से अलग हो **(Panikkar,2016:12)**। महर्षि **अरविंद घोष** ने 'राष्ट्रवाद के धर्म' की अवधारणा दी जिससे उनका तात्पर्य था कि अपनी मातृभूमि की सेवा धार्मिक स्तर की तीव्रता के हर्षोल्लास के साथ की जाए **(Peter Heebs, 2005:201)**। मौलाना **हुसैन अहमद मदनी** का मानना था कि "हम भारत के लोगों में एक चीज सामान्य(साझा) है और वो है हमारी भारतीयता जो हमारी धार्मिक, सांस्कृतिक मतभेदों के बावजूद बची रहती है जिस प्रकार जाति, गुण, रंग तथा आाकार इत्यादि हमारी मानवता को नही प्रभावित करते, ठीक इसी तरह धार्मिक और संस्कृतिक मतभेद हमारी साझी राष्ट्रीयता के बीच नही आते **(Goyal,2004:170-171)**।" राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के अनुसार "भारतीय राष्ट्रवाद न तो एकाधिकारवादी है, न ही आक्रमक और ना ही विनाशकारी **(All men are brothers,2005)**।" महात्मा गांधी के अनुसार भारतीय राष्ट्रवाद अंगेजों के विरूद्ध नहीं बल्कि उन नीतियों (उपनिवेशवाद व शोषण) के विरूद्ध है जिनका अंग्रेज प्रतिनिधित्व करते हैं (**Hind Swaraj,1909**)। गांधीजी का यह दृढ विश्वास था कि घृणा किसी भी तरह के राष्ट्रवाद के लिए आवश्यक नहीं होती। अंग्रजों से घृणा करने से हमारी वास्तविक राष्ट्रवादी भावनाएँ मर जाएंगी **(Is hatered essential for nationalism?: Gandhi's speech in Culcatta, 28.august.1929)** । नेहरू जी के अनुसार भारतीय राष्ट्रवाद समावेशी धर्मनिरपेक्ष तथा सहिष्णु है। नेहरू का मानना कि भारत को अपने अतीत से महत्वपूर्ण सीख लेनी चाहिए तथा विश्व भर की उपयोगी चीजों को अपनाना चाहिए (**Selected works of Jawaharlal Nehru vol.6)**।

भारतीय क्रांतिकारी तथा हिन्दू राष्ट्रवाद के सर्वप्रमुख सिद्धांतकार विनायक दामोदर सावरकर के अनुसार 'हिन्दू राष्ट्र तथा भारतीय राज्य दो अलग चीज हैं, उनके अनुसार मुस्लिम भारतीय राज्य के सदस्य तो हो सकते हैं किन्तु भारतीय राष्ट्र के नहीं। उनका मानना था कि उत्तर में हिमालय से लेकर दक्षिण में कन्याकुमारी तक तथा पश्चिम में सिंधु से पूर्व में महासहगर के मध्य तक भारत भूमि पर रहने वाले केवल वो लोग हिन्दू(उनके अनुसार राष्ट्र के सदस्य) हैं जो इस भूमि को मातृभमि ही नही बल्कि अपनी पवित्र भूमि अथवा पुन्य भूमि भी मानते हैं, जिनके पवित्र स्थल भारत में हैं तथा जिनमें भारतीय संस्कृति, मूल्यों, तथा प्रथाओं के प्रति आदर भाव है **(Hindutva,1923)**। महान क्रांतिकारी **शहीद भगत सिंह** के राष्ट्रवाद को जाति-व्यवस्था, अस्पृश्यता तथा सम्प्रदायवाद की उनके द्वारा की गयी भत्रसना के रूप में देखा जा सकता है। उनका यह दृढ विश्वास था कि धर्म-सम्प्रदाय का राष्ट्रवाद या राष्ट्रवादी होने से कुछ सम्बंध नहीं हैं **(Why I am an atheist,1930)**। भगत सिंह का राष्ट्रवाद केवल राजनीतिक स्वतंत्रता तक सीमित नहीं था, उन्होंने गरीबी, छुआछूत, सांप्रदायिक हिंसा, भेदभाव तथा शोषण से भी आजादी का आव्हान किया था। आधुनिक भारत के महान निर्माताओं में प्रमुख **डॉ. अम्बेडकर** के अनुसार किसी भी धर्म, संस्कृति तथा भाषा के प्रति निष्ठा रखने से हमारा राष्ट्रवाद बिल्कुल प्रभावित नही होना चाहिए एंव हम सबसे पहले तथा अंत में केवल भारतीय ही हैं **(Writings and speeches fo Babasaheb Dr. B.R. Ambedkar, Govt. of India,1990)**।

समस्या कथन

किसी भी विकासशील देश के लिए एक संतुलित राष्ट्रवाद उसके विकास एंव राष्ट्र निर्माण की प्रक्रिया हेतु अति आवश्यक होता है, किंतु जब यह राष्ट्रवाद एक सीमा के पार चला जाता है तो यह अति-राष्ट्रवाद अथवा अंधराष्ट्रवाद कहलाता है जो देश को अंततः फासीवाद की ओर ले जाता है। समकालीन भारत में राष्ट्रवाद की भ्रामक व्याख्याओं द्वारा भारतीय संस्कृति के सर्वप्रमुख मूल्यों- 'सर्वधर्म समभाव' तथा 'सर्वे भवंतु सुखिनः' इत्यादि को भुलाया जा रहा है तथा संवैधानिक मूल्यों जैसे- धर्मनिरपेक्षता, अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता, सामुदायिक विशेष-अधिकारों, संघवाद इत्यादि का क्रमशः अवमूल्यन हो रहा है जिससे भारत की आंतरिक राजनीति तथा

विदेश नीति पर व्यापक रूप से प्रभाव पड रहा है। 'इकोनॉमिस्ट इंटेलिजेंस यूनिट' द्वारा प्रत्येक वर्ष जारी की जाने वाली 'डेमोक्रसी इंडेक्स' में भारत की रैंकिंग 2014 में 27 वीं रैंक की तुलना में 2019 में 51 वीं तक गिर गयी है। इसी तरह 'वल्ड प्रेस फ्रीडम' इंडेक्स तथा कई अन्य महत्वपूर्ण 'रैंकिंग इंडेक्सेस' में भारत की रैंक कम हुई है।

भारतीय जनता पार्टी उस विशालकाय 'राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ' की एक स्वायत्त राजनीतिक घटक है जिसका साध्य भारत को एक हिन्दू राष्ट्र बनाना है। भारत को एक हिन्दू राष्ट्र बनाने का विचार न केवल अप्रासंगिक तथा असंभव है बल्कि बहुत ही खतरनाक भी है। वर्तमान समय में केद्र में सत्तारूढ भाजपा भी अघोषित रूप से 'हिन्दुत्ववादी राष्ट्रवाद' से प्रभावित है, जिसके चलते देश में 'नागरिकता संशेधन कानून' तथा 'नेशनल रजिस्टर ऑफ सिटिजनशिप' इत्यादि कानूनों को तैयार किया जा रहा है। ऐसे कानून देश के अल्पसंख्यकों में भय व अविश्वास तथा विदेशों में देश की धर्मनिरपेक्ष छवि के धूमिल होने की वजह बन रहे हैं। इसके अतिरिक्त 'सूचना का अधिकार अधिनियम' जैसे कानूनों को, जो कि आम जनता के हाथों में सरकार की जबाबदेही तय कराने हेतु कुछेक साधन हैं, कमजोर किया जा रहा है। इसके साथ ही भारतीय(अर्थात मुख्यधारा का) राष्ट्रवाद भी 'राष्ट्रीय स्वतंत्रता आंदोलन' से विरासत में मिले राष्ट्र-निर्माणकारी मूल्यों से दूर होता जा रहा है जो कि देश के बुद्धिजीवी वर्ग के लिए अति चिंता का विषय बन गया है। प्ररस्तुत शोध भाजपा के नेतृत्वाधीन 'राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन' की वर्तमान सरकार के कार्यकाल में प्रचलित राष्ट्रवाद के स्वरूप तथा इसके आंतरिक राजनीति एवं तथाकथित 'द आइडिया ऑफ इंडिया' पर पडने वाले प्रभावों का एक समीक्षात्मक अध्ययन प्रस्तुत करता है।

शोध का महत्व

वर्तमान समय में भारतीय जनता पार्टी भारत की सर्वप्रमुख राजनीतिक पार्टी है। इसने प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र दामोदर दास मोदी के नेतृत्व में 'कांग्रेस मुक्त भारत अभियान' द्वारा भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस पार्टी को इसके इतिहास के सबसे बुरे दौर में पहुंचा दिया है। प्रस्तुत शोध भाजपा के राष्ट्रवादी एजेंडे के अध्ययन एवं विश्लेषण

द्वारा भारत की समकालीन राजनीति को गहनता से समझने हेतु एक अंतदृष्टि प्रदान करता है। प्रस्तुत शोध भारतीय राजनीति पर हिन्दुत्ववादी राष्ट्रवाद के प्रभावों पर क्रमबद्ध ढंग से प्रकाश डालता है तथा इसकी संवेदनशीलता तथा प्रभावकारिता का विश्लेषण तथा निरीक्षण करता है।

प्रस्तुत शोध भारतीय राजनीति एंव भारतीय राजनीतिक सिद्धंत के विद्यार्थीयों तथा अध्येताओं के लिए महत्वपूर्ण है। इसके साथ ही यह राजनेताओं, लोकतांत्रिक आंदोलनकारियों व सक्रियतावादियों, राजनीतिक टिप्पणीकारकों एवं विश्लेषकों हेतु भी एक अद्वितीय स्त्रोत के रूप में उपयोगी सिद्ध होगा।

यह अध्ययन विषय पर शोध करने वाले आगामी शोधकर्ताओं के लिए भी उपयोगी होगा। प्रस्तुत शोध द्वारा भारतीय धर्मनिरपेक्ष तथा हिन्दू राष्ट्रवाद(सांस्कृतिक राष्ट्रवाद) के मध्य बीसवीं सताब्दी के आरंभ से ही विधमान संघर्षरत् एवं प्रतियोगितापूर्ण संबंधों के विश्लेषण में मदद मिल सकेगी। इसके साथ ही शोध द्वारा समकालीन भारत में संवैधानिक मूल्यों की महत्ता में आ रही गिरावट को रोकने हेतु महत्वपूर्ण सुझाव प्राप्त होंगे।

साहित्य पुनर्विलोकन

Sen,Amartya.The threats to secular India.(1993) प्रस्तुत शोध पत्र में लेखक द्वारा 1990 के दशक के अयोध्या आंदोलन एंव उससे संबंधित राजनीतिक दंगों की पृष्ठभूमि में 'द आइडिया ऑफ इंडिया' तथा इसके समक्ष चुनौतियों का विश्लेषणात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया गया है। लेखक के अनुसार देश की समावेशी संस्कृति, धर्मनिरपेक्षता तथा धार्मिक सहिष्णुता इत्यादि राष्ट्र निर्माणकारी मूल्यों की महत्ता को भारतीय अभिजन वर्ग ने कम करके आंकना शुरू कर दिया दिया था किंतु हिन्दू राष्ट्रवादियों के द्वारा बाबरी मस्जिद विध्वंस किए जाने से इनके महत्व को पुनः समझाना आवश्यक हो जाता है। लेखक ने भारतीय सेक्युलरवाद को भारतीय बहुसंस्कृतिकवाद एवं समावेशी संस्कृति का सबसे महत्वपूर्ण सिद्धांत माना है। लेखक के अनुसार सेक्युलरवाद का भारत में कोई विकल्प नहीं है। लेखक ने रोचक तथ्यों पर प्रकाश डालते हुए उल्लेख किया है कि भारत में ईसाई धर्म का इतिहास ब्रिटेन से भी पुराना है तथा सिख एंव जैन लोगों की सर्वाधिक संख्या भारत में है, इसके अतिरिक्त इस्लाम को यहां आए एक शहस्त्राब्दी से भी अधिक समय हो गया तथा बौद्ध धर्म भारत

के कई महानतम सम्राटों के समय भारत का राष्ट्रीय धर्म रहा है तो फिर हिन्दू राष्ट्रवादियों का हिन्दुराष्ट्र का दावा कैसे वैध माना जा सकता है? लेखक ने भारतीय सेक्युलरवाद की तीन भिन्न किन्तु संबंधित चुनौतियों का भी उल्लेख किया है, यथा-साम्प्रदायिक फासीवाद, साम्प्रदायिक राष्ट्रवाद तथा उग्रवादी ज्ञानविरोधवाद (मिलिटेण्ट ऑब्स्क्यूरेटिसम)। लेखक के अनुसार अयोध्या आंदोलन शातिर राजनीति से प्रेरित तथा उत्तर भारतीय राज्यों की निम्न साक्षरता दर एवं झूठे इतिहास द्वारा भोलीभाली जनता के मानसिक शोषण का परिणाम था।

Sathyamurthy, T. V. Indian nationalism: state of the debate. (1997) लेखक ने स्वतंत्रता-पूर्व काल में भारतीय राष्ट्रवादी विमर्श की तीन प्रवृत्तियों यथा- भारतीय राष्ट्रीय कांग्रस, हिंदू राष्ट्रवादी तथा साम्यवादियों का एक तुलनात्मक विश्लेषण प्रस्तुत किया है। लेखक ने स्वतंत्रतोत्तर काल में उभरती नई क्षेत्रीय राजनीतिक शक्तियों और क्षेत्रिय स्वयत्तता हेतु लोकतांत्रिक आंदालनों का राष्ट्रवाद के संदर्भ में निरीक्षण किया है। लेखक ने देश के विभाजन में तत्कालीन परस्पर विरोधी राष्ट्रवादों की भूमिकाओं को भी सूक्ष्म दृष्टि से प्रस्तुत किया है। अपने लेख के अंत में लेखक ने भारतीय राष्ट्रवाद की एक नई लोकतांत्रिक खोज की आवश्यता पर बल दिया है जो वर्तमान परिस्थितियों के उपयुक्त हो एंव बेहतर विकल्प का कार्य कर सकें।

Zavos, John. Searching for Hindu nationalism in Modern Indian history. (1999) लेखक ने भारत में सांस्कृतिक राष्ट्रवाद के उदय में 1910-20 के दशक के हिन्दू महासभा आंदोलन के योगदान का विश्लेष्णात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया है। लेखक के अनुसार वर्तमान में प्रचलित हिन्दू राष्ट्रवाद कई चरणों से गुजर कर अपनी वर्तमान अवस्था तक पहुंचा है। लेखक ने इस तथ्य को अपने शोधपत्र के केंद्र में स्थान दिया है कि सामान्यतः भारतीय सांस्कृतिक राष्ट्रवाद तथा हिन्दू सांप्रदायिकता को समान समझ लिया जाता है जो कि भ्रामक है। लेखक के अनुसार हिन्दू राष्ट्रवाद का हिन्दू सांप्रदायिकता में योगदान रहा है किंतु इस प्रकार की सांप्रदायिकता मुख्य रूप से संस्कृतिक राष्ट्रवाद के राजनीति में उपकरणीय प्रयोग का परिणाम है, जबकि हिन्दू राष्ट्रवाद काफी सीमा तक एक विचारधारा के समान हैं। लेखक के अनुसार हिन्दू महासभा आंदोलन ने कांग्रेस की नीतियों को अप्रभावी बताया था, लेकिन कंग्रेस उस समय इस आंदोलन से काफी प्रभावित रही थी, इसी के परिणामस्वरूप

कंग्रेस में विभाजन भी हुआ था। लेखक अंत में सलाह देते प्रतीत होते हैं कि यदि हिन्दू राष्ट्रवाद को एक सुसंगत राजनीतिक विचारधारा के रूप में प्रतिष्ठित होना है ता इसे सांप्रदायिकता को त्याग देना चाहिए।

Jaffrelot,Christophe. The Hindu nationalist movement and Indian politics. (1999) प्रस्तुत पुस्तक में लेखक ने भारतीय धर्म सुधार आंदोलन के समय आर्य समाज की स्थापना के साथ आरंभ हुए आधुनिक हिन्दू राष्ट्रवाद का विस्तृत विवरण प्रस्तुत करते हूए तथा सावरकर व गोलवलकर इत्यादि के विचारों से रूबरू कराते हुए बीसवीं सदी के अंतिम दशक में घठित घटनाक्रमों जैसे- बाबरी मस्जिद विध्वंस एवं भाजपा के उदय इत्यादि का सूक्ष्म दृष्टि से विश्लेषण किया है। लेखक ने जनसंघ एवं भाजपा की उत्पत्ति, विकास एंव इनके द्वारा अपनाई गयीं राजनीतिक रणनीतियों व युक्तियों पर भी व्यापक रूप से प्रकाश डाला है। लेखक ने हिन्दू राष्ट्रवादी संस्थाओं द्वारा किए जा रहे जातीय धार्मिक तर्कों पर आधारित धुर्वीकरण की समीक्षा एवं निरीक्षण किया है। इसके अतिरिक्त लेखक ने जेपी आंदोलन को भी हिन्दू राष्ट्रवाद के संदर्भ में विश्लेषित किया है एवं इस आंदोलन का भारतीय राजनीति विशेषकर हिन्दू राष्ट्रवादी दलों पर पडे प्रभावों का अध्ययन किया है।

Khilnani, Sunil. The idea of India.(2004) प्रस्तुत पुस्तक में लेखक ने भारत के पिछले सौ वर्षों के इतिहास का निरीक्षण कर 'भारतीयता की परिभाषा' अथवा 'भारतनामा' (द आईडिया ऑफ इंडिया) पर अपने विचार प्रस्तुत किए हैं। लेखक ने विद्वता कि साथ विश्लेषण किया है कि आखिर भारतीय होने के मायने क्या है? तथा इतनी अध्भुत विविधता के बावजूद वह क्या है जो हमें जोडे हुए है। लेखक ने अपनी पुस्तक में भारतीय लोकतंत्र के विकास एंव स्थायीकरण से जुडे महत्वपूर्ण प्रश्नों का उत्तर देने का प्रयास किया है तथा स्वतंत्रता के पश्चात देश की लोकतांत्रिक व्यवस्था पर नेहरू और इंदिरा जी के भिन्न् दृष्टिकोणों के व्यापक प्रभावों की चर्चा की गई है। लेखक ने समझाने का प्रयास किया है कि नेहरू जी की लोकतांत्रिक संस्थाओं के प्रति जो आस्था थी, उसने भारत के लोकतंत्र को स्थाई बनाने का कार्य किया तथा इंदिरा जी के शासनकाल में लगाए गए आपातकाल ने भारतीय लोकतंत्र को कई तरह से स्थाई रूप से नकारात्मक रूप में प्रभावित किया। लेखक ने पुस्तक के आखिरी अध्याय में हिन्दू राष्ट्रवादियों के 'आइडिया ऑफ इंडिया' की आलोचनात्मक

विवेचना की है। लेखक ने लोकतंत्र, धार्मिक सहिष्णुता, समावेशी संस्कृति , सामाजिक न्याय व सांस्कृतिक बहुलवाद को 'आईडिया ऑफ इंडिया' के सर्वप्रपुख गुणों में गिना है। लेखक के अनुसार इतिहास में विभिन्न समयों पर 'आईडिया ऑफ इंडिया' में काफी बदलाव भी हुआ है। लेखक अपनी पुस्तक में कई बार नेहरू जी के 'आईडिया ऑफ इंडिया' से अत्यधिक प्रभावित तथा अन्य प्रमुख विचारकों की उपेक्षा करता प्रतीत हुआ है।

Berglund, Henrik. Religion and nationalism: Politics of BJP (2004) लेखक ने इस तथ्य पर बल दिया है कि बावजूद इसके कि भाजपा ने हमेशा से ही सभी नागरिकों के राजनीतिक व नागरिक अधिकारों को पूरा सम्मान देने का दावा किया है, फिर भी अपने राजनीतिक व्यवहार व नीतियों द्वारा यह निरंतर दर्शाया है कि किस प्रकार से इसका हिन्दू राष्ट्रवाद भारतीय संविधान के सर्वसम्मत उदार मूल्यों से संघर्षरत रहा है, विशेषकर अल्पसंख्यकों के अधिकारों के मामले में। लेखक ने इसके साथ ही भाजपा की विचारधारा को राष्ट्रवाद व नागरिकता पर चल रही समकालीन बहस के संदर्भ में विश्लेषित किया है। इसके साथ ही लेखक ने भारतीय राष्ट्रीय कंग्रेस पार्टी के धर्मनिरपेक्ष राष्ट्रवाद का समीक्षात्मक अध्ययन एवं हिन्दु राष्ट्रवाद को बढावा देना में इसके अप्रत्यक्ष योगदान का भी सूक्ष्म दृष्टि से विश्लेषण किया है। अंत में लेखक इस निष्कर्ष पर पहुचता है कि भारतीय राष्ट्रवाद की हिन्दुत्ववादी परिभाषा का वर्तमान में स्थापित भारतीय धर्मनिरपेक्षता के सिद्धांत के साथ सहज होना लगभग असम्भव है।

Anderson, Benedict. Imagined communities. (2006) प्रस्तुत पुस्तक में लेखक ने राष्ट्र एवं राष्ट्रवाद की अवधारणाओं का ऐतिहासिक एंव विश्लेषणात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया है। लेखक के अनुसार राष्ट्र आधुनिक युग के उत्पाद हैं जिनका सामाजिक व संस्कृतिक रूप से निर्माण किया गया है। लेखक अपने अनुसंधान द्वारा इस निष्कर्ष पर पहुंचता है कि राष्ट्र 'राजनीतिक काल्पनिक समुदाय' होते हैं। लेखक ने तर्क दिया हैं कि राष्ट्र काल्पनिक समुदाय इसलिए होते हैं कि यह अन्य समुदायों के सदस्यों की तरह साझे हित एवं पहचान रखने के बावजूद इसके सदस्य छोटे से छोटे राष्ट्रों में भी अपने सभी साथी सदस्यों को कभी नहीं जान पाते हैं, न हीं मिल पाते हैं और न ही सुन पाते हैं, किन्तु फिर भी वे अपने सभी हमवतनों को अपने मस्तिष्क में अपने से

जुडा महसुस करते हैं। लेखक ने राष्ट्र और राष्ट्रवाद से संबंधित बहुत ही गूढ प्रश्नों जैसे- इसके उत्पत्ति, विकास, लोगों का इनके प्रति प्रेम व समर्पण, भाषा व संस्कृति का इसमें योगदान राष्ट्रवाद व साम्रज्यवाद का संबंध, राष्ट्रवाद का मनोमस्तिष्क पर पडने वाले प्रभावों इत्यादि के संबंध में विचारोत्तेजक उत्तर दिए हैं। राष्ट्रवाद की उत्पत्ति एवं इसकी विकास प्रक्रिया को गहनता से समझने हेतु यह पुस्तक अद्‌वितीय है जो इन राजनीतिक अवधारणाओं को इतिहास के रोचक वर्णन द्‌वारा विश्लेषित करती है।

Desai, A. R. Social Background of Indian Nationalism. (2005) प्रस्तुत पुस्तक में लेखक ने आधुनिक भारतीय इतिहास के लगभग 150 वर्षों की समय अवधि में भारतीय समाज के रूपांतरण तथा इसके परिणामस्वरूप भारतीय राष्ट्रवाद के विभिन्न् स्वरूपों यथा- सामाजिक, संस्कृतिक, धार्मिक और राजनीतिक स्वरूपों कें उत्थान का विस्तृत अध्ययन प्रस्तुत किया है। लेखक पुस्तक में भारतीय राष्ट्रवाद की उत्पत्ति का ऐतिहासिक, संश्लेषित और क्रमबद्ध विवरण देता है। ऐतिहासिक-भौतिकवादी पद्धति का उपयोग करते हुए उन्नीसवीं और बीसवीं सदी के भारत के विश्लेषण द्‌वारा लेखक राष्ट्रवाद के प्रभावों की व्यापकता में योगदान करने वालीं विभिन्न् शक्तियों को पृथक करने और उनका मूल्यांकन करने में सक्षम रहा है। भारतीय राष्ट्रवाद और राष्ट्रीय चेतना की उत्पत्ति की गहन समझ विकसित करने हेतु यह पुस्तक एक क्लासिक स्त्रोत का कार्य करती है। पुस्तक में ब्रिटिश-कालीन भारतीय सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक परिस्थितियों का विश्लेषणात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया गया है।

Pardesi, Manjeet S. & Oetken, Jennifer L. Secularism, democracy, and Hindu nationalism in India. (2008) लेखकों ने हिन्दू राष्ट्रवादी भारतीय जनता पार्टी के भारतीय राजनीति में उद्भव एवं विकास यात्रा को क्रमबद्ध ढंग से प्रस्तुत किया है एवं इसके भारतीय धर्मनिरपेक्षता, आंतरिक राजनीति, तथा विदेश नीति पर पडने वाले दीर्घकालीन प्रभावों का विश्लेषण किया है। लेखक ने तर्क दिया है कि भारतीय जनता पार्टी के उद्भव में हिन्दू राष्ट्रवादी विचारधारा से अधिक 1970-80 के दशक में देश की राजनीतिक परिस्थितियाँ जिम्मेदार है। पेपर मे विश्लेषण किया गया है कि किस तरह गठबंधन की राजनीति ने धीरे-धीरे बीजेपी के आक्रामक

राजनीतिक एजेंडे को सफल बनाने में योगदान दिया। लेख में भाजपा और राष्ट्रीय स्वंय सेवक संघ के मध्य संबंधों, इनकी परस्पर निर्भरता, इनके द्वारा भारतीय राष्ट्र एवं राष्ट्रीयता को पुनर्परिभाषित करने के प्रयासों एवं इनके अल्पसंख्यकों विशेषकर मुस्लिमों के खिलाफ एजेंडों की समीक्षा की गई है। लेख में दर्शाया गया है कि किस तरह भारतीय लोकतंत्र एंव धार्मिक राष्ट्रवाद के मध्य आरम्भ से ही एक प्रकार के द्वंदात्मक एवं संघर्षरत संबंध रहे हैं जो अब क्षद्म सेक्युलरवाद से हिन्दू राष्ट्रवाद की ओर अग्रसर हो रहे हैं।

Bhosale, B. G. Indian nationalism: Gandhi vis-a-vis Tilak and Savarkar. (2009) लेखक ने प्रस्तुत पेपर में लोकमान्य तिलक के संदर्भ में एवं सावरकर के विरूद्ध में भारतीय राष्ट्रवाद की गांधीवादी विचारधारा को विकसित करने का प्रयास किया है। लेखक ने व्यापक ढंग से सावरकर एवं गांधीजी के हिन्दू धर्म एवं राष्ट्रवाद संबंधी विचारों में विधमान विरोधाभासों को सूक्ष्म दृष्टि से विश्लेषित किया हैं। लेखक का कहना है कि गांधी एंव तिलक के विचारों में सावरकर एवं गोलवलकर के विचारों के मध्य विधमान मतभेदों की तुलना में कम मतभेद थे तथा समानताएं अधिक थी। लेखक के अनुसार गांधीजी ने लोकमान्य तिलक के चार राष्ट्रवादी एजेंडों अर्थात- स्वराज, स्वदेशी, राष्ट्रीय शिक्षा एवं बहिष्कार को ही आगे बढाने का कार्य किया था। लेखक ने गांधी व तिलक के बारे में उल्लेख किया है कि दोनों ही विचारक राष्ट्रवाद को एक मनोवैज्ञानिक एवं अध्यात्मिक अवधारणा समझते थे तथा दोनों ने ही राष्ट्रवाद के आध्यात्मिक पहलुओं पर जीवन भर कार्य किया।

Augustine,Sali.Religion and Cultural Nationalism. (2009) लेखक ने समकालीन भारत में राजनीतिक सांप्रदायिक हिंसा की घटनाओं का निरीक्षण एंव विश्लेषण किया है। लेखक के अनुसार भारत में जिस प्रकार के सांस्कृतिक राष्ट्रवाद में पिछले कुछ दशकों में वृद्धि हुई है, उसने सांप्रदायिक हिंसा की घटनाओं की वृद्धि में योगदान किया है। लेखक ने भारत के स्वतंत्रता के पश्चात धर्मनिरपेक्ष राष्ट्रवाद का क्रमशः आक्रामक हिन्दू राष्ट्रवाद में परिवर्तन को भी स्पष्ट रूप से विश्लेषित किया है। लेखक ने भारत विभाजन के पश्चात सांप्रदायिकता के समाप्त हों जाने की आशा के पूरे ना हों पाने पर भी खेद व्यक्त किया है। इसके साथ ही लेखक ने हिन्दू राष्ट्रवाद के संदर्भ में अल्पसंख्यकों के लिए विकल्प खोजने का प्रयास किया है। लेखक के

अनुसार आक्रामक हिन्दू राष्ट्रवाद का जवाब अन्य प्रकार के धार्मिक राष्ट्रवाद से नहीं दिया जा सकता एवं न ही इसके समक्ष नतमस्तक होना उपाय हो सकता है, बजाय इसके लेखक ने सुझाया है कि अल्पसंख्यकों को बहुसंख्यकों का विश्वास जीतने का प्रयास करना चाहिए तथा सेक्युलरवाद के सिद्धांत को कठोर रूप में अपनाया जाना चाहिए।

Anand, Dibyesh. Hindu nationalism in India and the politics of fear. (2016) लेखक ने अपनी पुस्तक में हिन्दू राष्ट्रवादियों की औपचारिक विचारधारा से परे व्यावहारिक स्तर पर अपनाई जाने वालीं युक्तियों, नीतियों, प्रचार-दुष्प्रचार, मिथकों तथा अनैतिहासिक इतिहास से युक्त कहानियों द्वारा किया जाने वाला प्रोपेगेंडा का व्यवहारिक तथा अनुभवात्मक शोध प्रस्तुत किया है। लेखक ने अपने शोध में आलोचनात्मक, अन्वेषणात्मक एवं विवरणात्मक पद्धति का प्रयोग करते हुए बहुत से ऐसे तथ्यों को प्रस्तुत किया है जिससे देश में बढ रही 'डर की राजनीति' 'इस्लामोफोबिया' तथा लोकतांत्रिक मूल्यों की महत्ता में आ रही कमी एंव 'बहुसंख्यकवाद' को बढावा मिलने के कारणों कों समझने की अंतदृष्टि प्राप्त होती है। लेखक के अनुसार हिन्दू राष्ट्रवादीयों के लिए मुस्लिम, ईसाई, सेक्युलरवादी, उदारवादी तथा साम्यवादी राष्ट्र के लिए सबसे बडा खतरा हैं तथा मुस्लिमों ने तो देश की स्वतंत्रता के पश्चात से जनसांख्यिकीय युद्ध छेड रखा है जिसका उद्देश्य भारत को एक मुस्लिम-बहुल राज्य बनाना तथा भारत की सभ्यता, संस्कृति, धर्म को नष्ट करना है। ध्यान देने योग्य है कि लेखक के शोध की मुख्य विषयवस्तु विषय से सम्बंधित अन्य अधिकांश विचारकों के विपरीत हिन्दुत्व एवं हिन्दू राष्ट्रवादियों की विचारधारा न होकर इनकी रणनीतियों एवं राजनीति को समझना है। लेखक द्वारा हिन्दूत्ववादियों की 'जागृत भारत' अथवा 'जागृत हिन्दू' की अवधारणा का भी विश्लेषणात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया गया है। लेखक ने पुस्तक में बताया है कि हिन्दूत्ववादियों के लिए धर्मनिरपेक्ष मुस्लिम एक अंतर्विरोधी शब्द है। लेखक के अनुसार 1980 के दशक के बाद से हिन्दू राष्ट्रवादी कांग्रेस पर छद्म धर्मनिरपेक्षता अपनाने के आरोप के जरिए अपनी राजनीतिक स्थिति मजबूत करने में काफी सफल हुए हैं लेकिन इनका उद्देश्य विशुद्ध धर्मनिरपेक्षता का पालन करना कभी नहीं रहा बल्कि विशुद्ध धर्मनिरपेक्षता के नाम पर हिन्दुत्ववाद को बढावा

देना रहा है। पुस्तक के अंत में लेखक ने मत व्यक्त किया है कि हो सकता है, हिन्दू राष्ट्रवादी देश को शक्तिशाली बनाने में सफल हो जाए लेकिन ये देश वो भारत नहीं रहेगा जिसके लिए हमारे राष्ट्रनिर्माताओं ने अपाना जीवन खपाया था।

Llewellyn, John Earl. A Victory for Secular India. (2011) लेखक ने बीसवीं सदी के अंतिम दशक में आए विश्व भर में धार्मिक राष्ट्रवाद के उभार का निरीक्षण एवं विश्लेषण किया है तथा उसमें भारतीय हिंदू दक्षिणपंथ के उत्थान को सबसे महत्वपूर्ण माना है। लेखक ने अपने लेख में भारत के 2004 के आम चुनावों को भी हिन्दू राष्ट्रवाद के संदर्भ में विश्लेषित किया है तथा इसे भारतीय धर्मनिरपेक्षतावाद की विजय माना है। लेखक ने अपने लेख में भारत के 2004 के आम चुनावों को भी हिन्दू राष्ट्रवाद के संदर्भ में विश्लेषित किया है तथा इसे भारतीय धर्मनिरपेक्षतावाद की विजय माना है। लेख के अंत में लेखक ने निकट भविष्य में हिन्दू राष्ट्रवाद के पुनः जोरदार आागमन की आशंका भी जताई है ,यदि वर्तमान भाजपा सरकार को इसके संदर्भ में देखें तो लेखक की आशंका सत्य प्रमाणित प्रतीत होती है।

Harriss, John. Hindu Nationalism in Action. (2015) लेखक ने प्रस्तुत पेपर में 2014 के भारतीय आम चुनाव में प्रधानमंत्री पद के प्रत्याशी के रूप में भाजपा द्वारा गुजरात कें मुख्यमंत्री नरेंद्र मोदी को चुने जाने के निहितार्थों का विश्लेषण किया है। लेख में मोदी द्वारा अपनाई गई चुनावी रणनीतियों एवं युक्तियों विशेषकर हिन्दू राष्ट्रवादी कार्ड खेलने एवं गुजरात मॉडल के प्रचार के संदर्भ में समीक्षा की गई है। मोदी एवं राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के संबंधों का भी लेखक ने समीक्षात्मक विश्लेषण प्रस्तुत किया है। लेखक ने मोदी जी के भारी बहुमत से विजय होने एवं इसके दक्षिण एशिया की राजनीति पर पडने वाले प्रभावों का भी निरीक्षण किया गया है।

Habib, S. Irfan. (Ed.). Indian Nationalism: The Essential Writings. (2017) प्रस्तुत पुस्तक में लेखक ने भारत में प्रचलित सांस्कृतिक राष्ट्रवाद के नाम पर अंध- राष्ट्रवाद एवं हिन्दू कट्टरवाद का निरीक्षण एवं आलोचनात्मक विश्लेषण किया गया है। पुस्तक के बारे में महत्वपूर्ण एवं रोचक तथ्य यह है कि लेखक ने

वर्तमान परिस्थितियों की समीक्षा हेतु स्वतंत्रता आंदोलन काल के महान आंदोलनकारियों, चिंतको एवं बुद्धिजीवी क्रांतिकारियों के विचारों का संकलन प्रस्तुत किया है। लेखक ने पुस्तक में सफलतापूर्वक यह समझाने का प्रयास किया है कि वर्तमान में प्रचलित हिन्दू राष्ट्रवाद हमारे राष्ट्र एवं संविधान निर्माताओं के विचारों से न केवल भिन्न है अपितु विरूद्ध भी है। आधुनिक भारतीय इतिहास के सभी महत्वपूर्ण विचारकों के राष्ट्रवाद संबंधी विचारों को प्रस्तुत करते हुए उनके राष्ट्रवाद को दस से अधिक प्रकार के राष्ट्रवादों में वर्गीकृत किया है तथा इसके साथ ही यह भी दर्शाया है कि इन आपसी विभिन्नता एवं मतभेदों के बावजूद सभी भारत को एक बहु-सांस्कृतिक, धर्मनिरपेक्ष तथा लोकतांत्रिक बनाए जाने पर सहमत हुए थे। इतिहास का सहारा लेते हुए लेखक ने वर्तमान प्रकृति के हिन्दू राष्ट्रावाद को संप्रदायवाद बताया है जिसके पोषण के लिए किसी समुदाय विशेष से घृणा की जरूरत पडती है। सम्पुर्ण पुस्तक में लेखक यह भी दर्शाते हुए प्रतीत हुआ है कि भारतीय इतिहास में राष्ट्रवाद एवं देश प्रेम का तात्पर्य समानार्थी रहा है तथा आधुनिक उग्र- राष्ट्रवाद अन्ततः भारतीय राष्ट्र, संविधान तथा इसके मूल्यों के लिए खतरा है।

Habib,Irfan. Nationalism in India: Past and Present. (2017) लेखक के अनुसार भारतीय राष्ट्रवाद की स्वतंत्रता-पूर्व काल वाली प्रकृति तथा समकालीन भारत के राष्ट्रवाद की प्रकृति में बहुत बदलाव आ चुका ह। लेखक के अनुसार स्वतंत्रता पूर्व काल में राष्ट्रवाद की केवल एक ही कसौटी थी- ब्रिटिश सरकार का विरोध अथवा भारत की राजनीतिक स्वतंत्रता का समर्थन। आगे लेखक तर्क देते हुए कहते है कि इस साधारण सी कसौटी पर भी मुस्लिम लीग, हिन्दू महासभा एवं राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ पूरी तरह खरे नहीं उतर सके। लेखक ने वर्तमान भाजपा सरकार के कार्यकाल में प्रचलित दोषपूर्ण व भ्रामक राष्ट्रवाद पर भी कटाक्ष किया है तथा भारतीय बहु-सांस्कृतिकवादी एवं धर्मनिरपेक्ष राष्ट्रवाद को सशक्त करने की आवश्यकता पर बल दिया है।

Anderson, Edward & Longkumer, Arkotonh. 'Neo-Hindutva': evolving forms, spaces, and expressions of Hindu nationalism.(2018) लेखकों ने भारत में वर्तमान भाजपा सरकार के कार्यकाल में देश की आंतरिक राजनीति के संदर्भ में अवतिरत हुए एक नए प्रकार के 'हिन्दुत्व' पर प्रकाश डाला है जिसे 'नव-

हिन्दुत्व' का नाम दिया है तथा इसे 'क्लासिक हिन्दूत्व' के विचार से काफी भिन्न माना है। लेखक के अनुसार इस नव हिन्दूत्व से न केवल भाजपा बल्कि कहीं न कहीं अन्य अनेक राजनीतिक दल भी प्रभावित हुए हैं। कांग्रेस एवं राहुल गांधी द्वारा अपनाई गई 'नरम हिन्दुत्व' की नीति को लेखक ने इसी संदर्भ में विश्लेषित किया है।

Bieber, Florian. Is nationalism on the rise? Assessing global trends. (2018) लेखक के अनुसार पिछले कुछ वर्षों में वैश्विक स्तर पर अनेक देशों में राष्ट्रवाद का विभिन्न प्रकार से उभार हुआ है। लेखक ने अमेरिका में ट्रंप की विजय, यूके में ब्रेक्जिट का मुद्दा, जापानी प्रधानमंत्री की राष्ट्रवादी नीतियों को मिलने वाले समर्थन, भारत में हिन्दू राष्ट्रवादी मोदी की भारी बहुमत से विजय तथा इटली, जर्मनी इत्यादि देशों में दक्षिणपंथी दलों को मिली सफलताओं को वैश्विक स्तर पर राष्ट्रवाद के उभार के संदर्भ में विश्लेषित किया है। लेखक ने राष्ट्रवाद तथा बहुमतवाद, लोकलुभावनवाद(पॉपुलिज्म) व सर्वाधिकारवाद के मधय संबंधों पर महत्वपूर्ण विचार प्रस्तुत किए है। अपने व्यवहारवादी अध्यययन में लेखक ने विभिन्न देशों में राष्ट्रवादी दलो, राष्ट्रवादी नीतियों एवं जातीय प्रेरित हिंसा की घटनाओं से संबंधित महत्वपूर्ण तथ्यों पर भी प्रकाश डाला है एंव डेटा प्रस्तुत किया है। लेखक ने विभिन्न देशों में राष्ट्रवादी मनोवृत्तियों में वृद्धि को विविध सेकेतकों के माध्यम से समझाने का प्रयास किया है जिसमें लेखक ने विभेदकारी नागरिकता प्रावधान, मीडिया द्वारा राष्ट्रवादी दलों के संदर्भ में की जा रही रिपोर्टिंग 'विशेष सामुदायिक समूहों' के प्रति बढती साम्प्रदासिक हिंसा को महत्वपूर्ण माना है।

Anderson, Walter. & Damle, Shridhar. The brotherhood in saffron. (2019) प्रस्तुत पुस्तक में लेखकों ने राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की उत्पत्ति एंव विकास का एक ऐतिहासिक तथा व्यवहारवादी अध्ययन प्रस्तुत किया है। लेखक ने विश्व के इस सबसे विशाल हिंदूवादी सेगठन की विचारधारा, प्रशिक्षण कार्यक्रम एवं कार्य-प्रणाली का सूक्ष्म दृष्टि से विस्तारपूर्वक निरीक्षण एवं विश्लेषण किया है। लेखक द्वारा राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का हिन्दू पुनरूत्थान में योगदान की भी समीक्षा की है तथा इसके सहायक संगठनों के संदर्भ में महत्वपूर्ण विवरण दिया है। लेखक ने राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ एवं राजनीति से इसके संबंधों का समीक्षात्मक अध्ययन

प्रस्तुत किया है तथा वर्तमान भाजपा सरकार की सफलता में इसके सशक्त संगठनात्मक कार्यप्रणाली को निर्णायक माना है। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की आंतरिक अपारदर्शी कार्यप्रणाली को समझाने हेतु लेखक ने विस्तृत रूप से महत्वपूर्ण विवरण एवं विश्लेषण प्रस्तुत किया है।

Jaffrelot, Christophe. The Fate of Secularism in India. (2019) लेखक ने अपने शोध पत्र में स्वतंत्रता के पश्चात से भारत में धर्मनिर्पेक्षता के सिद्धांत के विकास, इसके समक्ष चुनौतियों तथा इस पर हिन्दू राष्ट्रवाद के प्रभाव का समीक्षात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया है। लेखक के अनुसार स्वतंत्रता के पश्चात राष्ट्रनिर्माताओं के समक्ष इस संबंध में तीन विकल्प थे- धर्मनिरपेक्षवाद, हिंन्दू राष्ट्रवाद तथा हिन्दू परंपरावाद। लेखक के अनुसार हिन्दू राष्ट्रवादी संविधान सभा में अनुपस्थित थे किंतु हिंदू परंपरावादी एवं धर्मनिरपेक्षवाद समर्थकों की उपस्थिति पर्याप्त थी। लेखक के अनुसार राष्ट्र के संविधान निर्माताओं ने अन्ततः धर्मनिरपेक्ष तथा बहु-सांस्कृतिक राष्ट्र स्वीकार किया। लेखक ने तथ्यों के साथ बताया है कि 1948 से 1970 के मध्य सांप्रदायिकता एवं धार्मिक कट्टरवाद का लगभग अभाव था किंतु इंदिरा गांधी एवं राजीव गांधी की कुछ क्षद्म सेक्युलरवादी नीतियों ने हिन्दू राष्ट्रवादीयों को अपने प्रसार का उपयुक्त अवसर दे दिया जिसका परिणाम अन्ततः बाबरी मस्जिद विध्वंस के रूप में दिखाई दिया। लेखक के अनुसार हिन्दू राष्ट्रवादियों ने कोग्रेस का विरोध क्षद्म सेक्यूलरवाद अपनाने के लिए किया किंतु वे स्वयं कभी सेक्युलरवाद के समर्थक नहीं रहे बल्कि हमेशा से 'हिन्दू बहूमतवाद' के समर्थक है। लेखक के अनुसार 2014 में भाजपा की सरकार बनने से राजनीतिक समीकरण बहुत सीमा तक बदल गए हैं। लेखक ने तथ्यों के साथ अपना मत व्यक्त करते हुए कहा है कि बहुसंख्यावाद की राजनीति के दबावस्वरूप कांग्रेस भी पिछले कुछ वर्षों से नरम हिन्ूत्व को अपनाती प्रतीत हुई है। लेखक का मानना है कि भारत में सेक्युलरवाद का भविष्य बहुत सीमा तक 2019 के आाम चुनाव में भाजपा के भविष्य पर निर्भर है।

अध्ययन के उद्देश्य

1. भारतीय राष्ट्र एवं राष्ट्रवाद की एतिहासिक पृष्ठभूमि का अध्ययन करना।

2. भारत में सांस्कृतिक एवं धर्मनिरपेक्ष राष्ट्रवाद का तुलनात्मक अध्ययन करना।

3. 'हिन्दुत्व' एवं 'हिंदुराष्ट्र की राजनीति' का अध्ययन करना।

4. भाजपा के नेतृत्वाधीन वर्तमान 'राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन' (एन.डी.ए.) सरकार के कार्यकाल में भारतीय राष्ट्रवाद के परिवर्तित स्वरूप का अध्ययन करना।

5. भारतीय राष्ट्रवाद के परिवर्तित स्वरूप के प्रभावों एवं प्रतिक्रियाओं का अध्ययन करना।

परिकल्पनाएं

1. भारतीय प्रायद्वीप में एक प्रकार की सांस्कृतिक-भौगोलिक एकता की चेतना प्राचीन काल से अस्तित्व में है तथा भारतीय राष्ट्रवाद ब्रिटिश औपनिवेशिक काल की अप्रत्यक्ष देन है।

2. बीसवीं सदी के आरंभ से ही भारत में सांस्कृतिक एवं धर्मनिरपेक्ष राष्ट्रवाद की विचारधाराओं के मध्य सम्बंध स्पर्धात्मक एवं संघर्षपूर्ण रहे हैं।

3. 'हिन्दुत्व' एवं 'हिंदुराष्ट्र की विचारधारा' ने पिछले तीन दशकों में भारतीय राजनीति तथा संवैधानिक मूल्यों को अत्यधिक प्रभावित किया है।

4. भाजपा के नेतृत्वाधीन वर्तमान 'राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन'(एन.डी.ए.) सरकार के कार्यकाल में भारतीय राष्ट्रवाद की प्रकृति में महत्वपूर्ण परिवर्तन हुए हैं।

5. भारतीय राष्ट्रवाद के परिवर्तित स्वरूप का प्रभाव विभिन्न समुदायों एवं लोकांत्रिक अधिकार आंदोलनों पर भिन्न-भिन्न रहा है तथा उनकी प्रतिक्रियाएँ भी भिन्न-भिन्न रही हैं।

शोध पद्धति

शोध अभिकल्पः- प्रस्तावित अध्ययन 'गुणात्मक अनुसंधान' के तहत 'ऐतिहासिक-तुलनात्मक' (कम्परैटिव-हिस्टोरिकल) शोधों के अंतर्गत आता है जिसमें मुख्य रूप से ऐतिहासिक-तुलनात्मक विधि का प्रयोग किया जायेगा तथा पध्दति के रूप में प्रमुख रूप से अनुसंधान की 'विवरणात्मक' पध्दति का प्रयोग किया जाएगा।

तथ्य संकलनः- प्रस्तुत अध्ययन में तथ्य संकलन हेतु प्राथमिक एंव द्वितीयक दोनों प्रकार के स्रोतों का यथोचित उपयोग किया जाएगा।

प्राथमिक स्रोतः- प्राथमिक स्रोतों के अंतर्गत तथ्य संकलन हेतु मुख्य रूप से साक्षात्कार एवं सामुहिक साक्षात्कार(फोकस ग्रुप एवं ग्रुप डिस्कसन) विधि का प्रयोग किया जायेगा जिनमें विषय से संबंधित प्रमुख विशेषज्ञों एंव विश्लेषकों से साक्षात्कार किया जायेगा। इसके अतिरिक्त संसदीय कानूनों, सरकारी दस्तावेजों एवं विषय से संबंधित अध्ययन की अन्य प्राथमिक सामग्री का भी अध्ययन किया जाएगा।

द्वितीयक स्त्रोतः- अनुसंधान हेतु द्वितीयक स्त्रोतों में प्रमुख रूप से पुस्तक, समाचार पत्र एंव अन्य विभिन्न पत्र-पत्रिकाएँ, जर्नल्स व ई.जर्नल्स तथा विषय से संबंधित पूर्व में किए गए विभिन्न शोधों इत्यादि का यथोचित प्रयोग किया जाएगा।

प्रस्तावित अध्याय

प्रथम अध्याय:- 'प्रस्तावना'

द्वितीय अध्याय:-'भारतीय राष्ट्र एवं राष्ट्रवाद की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि'

तृतीय अध्याय:- 'सांस्कृतिक एवं धर्मनिरपेक्ष राष्ट्रवाद: एक तुलनात्मक अध्ययन'

चतुर्थ अध्याय:- 'हिन्दुत्व की विचारधारा एवं हिंदुराष्ट्र की राजनीति'

पंचम अध्याय:- 'भाजपा के नेतृत्वाधीन वर्तमान एन.डी.ए. की सरकार के कार्यकाल में भारतीय राष्ट्रवाद का परिवर्तित स्वरूप'

षष्ठ्म अध्याय:- 'परिवर्तित राष्ट्रवाद के प्रभाव एवं प्रतिक्रियाएं'

सप्तम अध्याय:- 'निष्कर्ष एवं सुझाव'

Bibliography

- McCully, B. T. (1935). The origins of Indian nationalism according to native writers. The Journal of Modern History, 7(3), 295-314.
- Golwalkar, M. S. (1939). Our Nationhood Defined. Nagpur, India: Bharat Prakashan.

- Kohn, H. (1955). Nationalism: Its meaning and history (Vol. 8). Princeton, NJ; Toronto: Van Nostrand.
- Harrison,S.S. (1956). The challenge to Indian nationalism. Foreign Affairs, 34(4), 620-636.
- Dash, S. C. (1958). Nature and Significance of Indian Nationalism. The Indian Journal of Political Science, 19(1), 63-72.
- Sharma,R. P. (1958).Swami Dayanand's contribution to indian nationalism and his political philosophy. The Indian Journal of Political Science, 19(1), 25-34
- Upadhyaya, D. (1965). Integral humanism. Bharatiya Janta Party.
- Narayanan, K. R. (1965). Nationalism and democracy in India. Indian & Foreign Review, 2(17), 9-11.
- Golwalkar, M. S. (1966). Bunch of thoughts (pp. 332-3). Bangalore,, India: Vikrama Prakashan; sole distributors: Rashtrotthana Sahitya.
- Savarkar, S. S. (1967). Historic Satements By Savarkar. GP PARCHURE Goregaonkar Chawl No. 2 Girgaon, Bombay 4.
- Savarkar, V. D. (1969). Hindutva; who is a Hindu?. Bombay: Veer Savarkar Prakashan.
- Seal, A. (1973). Imperialism and nationalism in India. Modern Asian Studies, 7(3), 321-347.
- Chandra, S. (1980). Secular Potential of Early Indian Nationalism. Economic and Political Weekly, 773-775.
- Raghavan, T. C. A. (1983). Origins and Development of Hindu Mahasabha Ideology: The Call of VD Savarkar and Bhai Parmanand. Economic and Political Weekly, 595-600.
- Savarkar, V. (1984). Hindu rashtra darshan. Prabhat Prakashan.
- Thapar, R. (1989). Imagined religious communities? Ancient history and the modern search for a Hindu identity. Modern Asian Studies, 23(2), 209-231.
- Khare, B. B. (1989). Indian Nationalism: The Political Origin. The Indian Journal of Political Science, 50(4), 533-559.
- Clymer, K. J. (1990). Samuel Evans Stokes, Mahatma Gandhi, and Indian Nationalism. Pacific Historical Review, 59(1), 51-76.

- Varshney, A. (1991). India, Pakistan, and Kashmir: Antinomies of Nationalism. Asian Survey, 31(11), 997-1019.
- Parekh, B. (1991). Nehru and the national philosophy of India. Economic and Political Weekly, 35-48.
- Juergensmeyer, M. (1993). The new cold war?: Religious nationalism confronts the secular state (Vol. 5). Univ of California Press
- Basu, T., Datta, P., Sarkar, S., Sarkar, T., & Sen, S. (1993). Khaki shorts and saffron flags: A critique of the Hindu right (Vol. 1). Orient Blackswan.
- Sarkar, S. (1993). The fascism of the Sangh Parivar. Economic and Political Weekly, 163-167.
- Ahmad, A. (1993). Fascism and national culture: Reading Gramsci in the days of Hindutva. Social Scientist, 32-68.
- Sen, A. (1993). The threats to secular India. Social scientist, 5-23.
- Jaffrelot, C. (1993). Hindu nationalism: Strategic syncretism in ideology building. Economic and political weekly, 517-524.
- Mazmudar, V. (1994). Women and Indian Nationalism.
- Wirsing, R. G., & Mukherjee, D. (1995). The saffron surge in Indian Politics: Hindu nationalism and the future of secularism. Asian Affairs: An American Review, 22(3), 181-206.
- Sarkar, S. (1996). Indian nationalism and the politics of Hindutva. Contesting the Nation: Religion, Community, and the Politics of Democracy in India, 270-93.
- Ludden, D. (Ed.). (1996). Contesting the nation: Religion, community, and the politics of democracy in India. University of Pennsylvania Press.
- Sathyamurthy, T. V. (1997). Indian nationalism: state of the debate. Economic and Political Weekly, 715-721.
- Gaikwad, S. M. (1998). Ambedkar and Indian nationalism. Economic and Political Weekly, 515-518.
- Sethi, R. (1999). Myths of the nation: national identity and literary representation. Oxford University Press.

- Seth, S. (1999). Rewriting Histories of Nationalism: The Politics of "Moderate Nationalism" in India, 1870–1905. The American Historical Review, 104(1), 95-116.
- Jaffrelot, C. (1999). The Hindu nationalist movement and Indian politics: 1925 to the 1990s: strategies of identity-building, implantation and mobilisation (with special reference to Central India). Penguin Books India.
- Hansen, T. B. (1999). The saffron wave: Democracy and Hindu nationalism in modern India. Princeton University Press.
- Sarkar, S. (1999). Conversions and politics of Hindu Right. Economic and Political Weekly, 1691-1700.
- Misra, A. (1999). Savarkar and the Discourse on Islam in Pre-Independent India. Journal of Asian History, 33(2), 142-184.
- Zavos, J. (1999). Searching for Hindu nationalism in Modern Indian history: Analysis of some early ideological developments. Economic and political weekly, 2269-2276.
- Zavos, J. (2000). The emergence of Hindu nationalism in India (Vol. 42). New Delhi: Oxford University Press.
- Thapar, R. (2000). Hindutva and history. Frontline, 17(19), 15-16.
- Rajagopal, A. (2001). Politics after television: Hindu nationalism and the reshaping of the public in India. Cambridge University Press.
- Bhatt, Chetan (2001) Hindu nationalism: origins, ideologies and modern myths. Berg, Oxford, UK. ISBN 9781859733431.
- Savarkar, V. D. (2003). Hindutva [First published as Essentials of Hindutva (1923)]. Delhi: Hindi Sahitya Sadan.
- Bhuyan, P. R. (2003). Swami Vivekananda: Messiah of Resurgent India. Atlantic Publishers & Dist.
- Katju,M.(2003). Vishva Hindu Parishad and Indian Politics. Orient Blackswan
- Khilnani, S. (2004). The idea of India. Penguin Books India.
- Berglund, H. (2004). Religion and nationalism: Politics of BJP. Economic and Political Weekly, 1064-1070.

- Jaffrelot, C. (2005). The Sangh Parivar: A Reader.
- Anderson, B. (2006). Imagined communities: Reflections on the origin and spread of nationalism. Verso books.
- Desai, A. R. (2005). Social Background of Indian Nationalism (6Th-Edn). Popular Prakashan.
- Muralidharan, S. (2006). Religion, Nationalism and the State: Gandhi and India's Engagement with Political Modernity. Social Scientist, 3-36.
- Guha, R. (2006). Golwalkar-The Guru of Hate. The Radical Humanist.
- Needham, A. D., & Rajan, R. S. (Eds.). (2007). The crisis of secularism in India. Duke University Press.
- Sharma, J. (2007). Terrifying Vision: MS Golwalkar, the RSS, and India. Penguin Books India.
- Prakash, G. (2007). Secular Nationalism, Hindutva, and the Minority. The crisis of secularism in India, 177-188.
- Gellner, E. (2008). Nations and nationalism. Cornell University Press.
- Pardesi, M. S., & Oetken, J. L. (2008). Secularism, democracy, and Hindu nationalism in India. Asian Security, 4(1), 23-40.
- Thachil, T. (2009). The saffron wave meets the silent revolution: Why the poor vote for Hindu nationalism in India.SAGE pub.9
- Jaffrelot, C. (Ed.). (2009). Hindu nationalism: A reader. Princeton University Press.
- Narayan, B. (2009). Fascinating Hindutva: Saffron Politics and Dalit Mobilisation. SAGE Publications Ltd.
- Bhosale, B. G. (2009). Indian Nationalism: Gandhi Vis-A-Vis Tilak And Savarkar. The Indian Journal of Political Science, 419-427.
- Augustine, S.(2009). 5 Religion and Cultural Nationalism: Socio-Political Dynamism of Communal Violence in India.
- Llewellyn, J. E. (2011). “A Victory for Secular India”? Hindu Nationalism in the 2004 Election. Politics and religion, 4(1), 49-70.
- Banerjee, S. (2012). Make me a man!: Masculinity, Hinduism, and nationalism in India. suny Press.

- Smith, A. D., & Smith, A. (2013). Nationalism and modernism. Routledge.
- Harriss, J. (2015). Hindu Nationalism in Action: The Bharatiya Janata Party and Indian Politics. South Asia: Journal of South Asian Studies, 38(4), 712-718.
- Anand, D. (2016). Hindu nationalism in India and the politics of fear. Springer.
- Ozkirimli, U. (2017). Theories of nationalism: A critical introduction. Palgrave.
- Habib,S. I. (Ed.). (2017). Indian Nationalism: The Essential Writings. Aleph Book Company.
- Habib, I. (2017). Nationalism in India: Past and Present. Social Scientist, 45(3/4), 3-8.
- Katju,M.(2017). Hinduising Democracy: The Vishva Hindu Parishad in Contemporary India. New Text.
- Anderson, E., & Longkumer, A. (2018). 'Neo-Hindutva': evolving forms, spaces, and expressions of Hindu nationalism.
- Bieber, F. (2018). Is nationalism on the rise? Assessing global trends. Ethnopolitics, 17(5), 519-540.
- Rehman, M. (Ed.). (2018). Rise of saffron power: reflections on Indian politics. Routledge.Taylor & Francis.
- Vaishnav, M. (2019). The BJP in Power: Indian Democracy and Religious Nationalism.
- Vaishnav, M. (2019). Religious Nationalism and India's Future'.
- Jaffrelot, C. (2019). The Fate of Secularism in India.
- Shepherd, K. I. (2019). Why I am not a Hindu: A Sudra critique of Hindutva philosophy, culture and political economy. SAGE Publications India.
- Anderson, W., & Damle, S. (2019). The brotherhood in saffron: the Rashtriya Swayamsevak Sangh and Hindu revivalism. Penguin Random House India Private Limited
- Chatterji, A. P., Hansen, T. B., & Jaffrelot, C. (Eds.). (2019). Majoritarian state: How Hindu nationalism is changing India. Oxford University Press
- Singh,U.K. & Roy,A.(2019).Election commission of India: Institutionalising democratic uncertainties.Oxford University Press.
- Komireddi,K.S.(2019).Malevolent Republic: A short History of the New India. Oxford University Press.